Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

ई-पाठशाला कार्यक्रम

Class 11th

भौतिक भूगोल के मूल सिद्धांत

GEOGRAPHY

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

03

RAPID REVISION

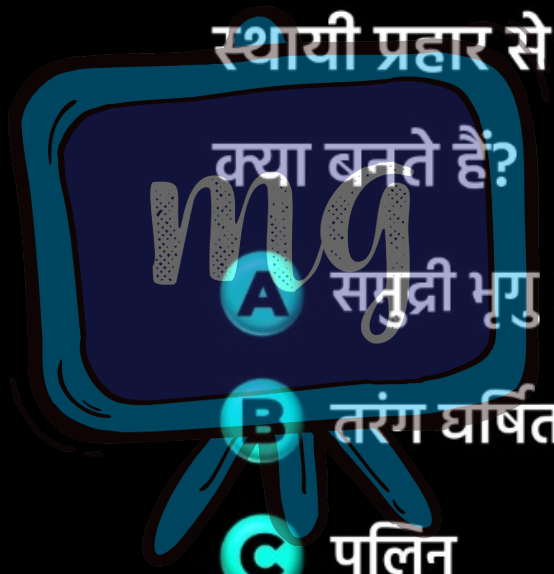


Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.1 सागरीय किनारों पर पहाड़ी पार्श्व जब तरंगों के स्थायी प्रहार से पीछे हटते हैं, तो उनके सम्मुख क्या बनते हैं?



A समुद्री भृगु (Cliff)

B तरंग घर्षित चबूतरे

C पुलिन

D रोधिकाएँ

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.2 ऐसी रोधिका जिसका एक सिरा खाड़ी के शीर्षस्थल से जुड़ा हो, क्या कहलाती है?

A अपतट रोधिका

B स्पिट (Spit)

C लेगून

D रोध

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.3 मरुस्थलों में पवन द्वारा धरातल से चट्टानों के छोटे कण व धूल उठाने की प्रक्रिया क्या कहलाती है?

A अपवाहन (Deflation)

B बालू घर्षण

C साल्टेशन

D पृष्ठक्षरण

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.4 मरुस्थलों में पर्वतों के पाद पर मलबे रहित अथवा मलबे सहित मंद ढाल वाले चट्टानी तल क्या कहलाते हैं?

A पेडीमेंट (Pediment)

B प्लाया

C इंसेलबर्ग

D छत्रक

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

Q.5 नव चंद्राकार टिब्बे जिनकी भुजाएँ पवनों की दिशा में निकली होती हैं, क्या कहलाते हैं?

A बरखान (Barchans)

B सीफ़

C परवलयिक

D अनुप्रस्थ

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

रिक्त स्थान पूर्ति

Q.6 भारत का पश्चिमी तट एक ऊँचा चट्टानी_____ तट है.



Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.7 जब रोधिका तथा स्पिट किसी खाड़ी के मुख पर निर्मित होकर इसके मार्ग को अवरुद्ध कर देते हैं, तब _____ निर्मित होते हैं.



Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

Q.8 मरुस्थलीय प्रदेशों में पर्वतों के घिसने और पेडीमेंट के आगे बढ़ने से बने उच्च धरातलविहीन मैदान _____ या पदस्थली कहलाते हैं।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.9 मरुस्थलों में पर्याप्त जल उपलब्ध होने पर बेसिन के मध्य बनने वाली उथली जल झीलें _____ कहलाती हैं।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.10 _____ बालू-टिब्बों में पवनों की दिशा में बदलाव के कारण केवल एक भुजा ही विकसित होती है.



Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.11 समुद्री स्टैक (Stack) किसे कहते हैं?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.11 समुद्री स्टैक (Stack) किसे कहते हैं?

उत्तर :

- तरंग अपरदन के कारण समुद्री भृगु और पहाड़ियों के पीछे हटने से चट्टानों के कुछ अवशेष तटों पर अलग-थलग छूट जाते हैं।
- ऐसी अलग-थलग प्रतिरोधी चट्टानें जो कभी भृगु का भाग थीं, समुद्री स्टैक कहलाती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.12 वेलांचली प्रवाह (Longshore current) का क्या कार्य है?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.12 वेलांचली प्रवाह (Longshore current) का क्या कार्य है?

उत्तर :

जैसे ही तटों के साथ अपरदन आरंभ होता है, वेलांचली प्रवाह और तरंगें इन अपरदित पदार्थों को सागरीय किनारों पर पुलिन (Beaches) और रोधिकाओं के रूप में निक्षेपित करती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.13 बालू घर्षण (Sand blasting) की प्रक्रिया क्या है?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

Q.13 बालू घर्षण (Sand blasting) की प्रक्रिया क्या है?

उत्तर :

वायु में उपस्थित रेत के कण जब मरुस्थलों में चट्टानों के तल से टकराते हैं, तो पवन के संवेग के आधार पर चट्टानों पर चोट पहुँचाकर घर्षण करते हैं, जिसे बालू घर्षण कहा जाता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.14 छत्रक (Mushroom) शैल का निर्माण कैसे होता है?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.14 छत्रक (Mushroom) शैल का निर्माण कैसे होता है?

उत्तर :

- मरुस्थलों में पवन अपवाहन व अपघर्षण द्वारा चट्टानें शीघ्र कट जाती हैं।
- कुछ प्रतिरोधी चट्टानों के घिसे हुए अवशेष जिनके आधार पतले तथा ऊपरी भाग विस्तृत और गोल टोपी के आकार के होते हैं, छत्रक कहलाते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लघु उत्तरीय प्रश्न

Q.15 ऊँचे चट्टानी तटों (जलमग्न तटों) और निम्न अवसादी तटों (उन्मग्न तटों) की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लघु उत्तरीय प्रश्न

Q.15 ऊँचे चट्टानी तटों (जलमग्न तटों) और निम्न अवसादी तटों (उन्मग्न तटों) की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर :

- ऊँचे चट्टानी तटों के सहारे तटरेखाएँ अनियमित होती हैं तथा नदियाँ जलमग्न प्रतीत होती हैं। यहाँ प्रारंभिक निक्षेपित स्थलरूप नहीं होते, बल्कि तरंगों के प्रहार से समुद्री भृगु, तरंग घर्षित चबूतरे और अपरदित स्थलरूपों की बहुतायत होती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इसके विपरीत, निचले अवसादी तटों के सहारे नदियाँ तटीय मैदान व डेल्टा बनाती हैं।
- यहाँ तटरेखा अपेक्षाकृत सम व चिकनी होती है, समुद्रोन्मुख स्थल मंद ढाल वाला होता है, और इन तटों पर पुलिन, रोधिकाएँ, लैगून जैसी निक्षेपित स्थलाकृतियाँ बहुतायत में पाई जाती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.16 तटीय क्षेत्रों में रोधिकाओं, रोध और स्पिट्स का क्या महत्त्व है?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

Q.16 तटीय क्षेत्रों में रोधिकाओं, रोध और स्पिट्स का क्या महत्त्व है?

उत्तर :

- समुद्र के अपतट पर तट के समांतर रेत और शिंगिल की कटक अपतट रोधिका कहलाती है, और जब यह ऊपर दिखाई देती है तो रोध-रोधिका बनती है।
- जब रोधिका का एक सिरा खाड़ी या शीर्षस्थल से जुड़ जाता है, तो उसे स्पिट कहते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

- ये रोधिकाएँ और रोध समुद्र के अपतट पर तूफान और सुनामी लहरों के आक्रमण के समय सबसे पहले बचाव करती हैं क्योंकि ये इनकी प्रबलता को कम कर देती हैं।
- इनके बाद पुलिन और मैंग्रोव इन प्रहारों को झेलते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.17 मरुस्थलों में पेडीमेंट और पेडीप्लेन (पदस्थली) का विकास किस प्रकार होता है?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

Q.17 मरुस्थलों में पेडीमेंट और पेडीप्लेन (पदस्थली) का विकास किस प्रकार होता है?

उत्तर :

- पर्वतों के पाद पर मलबे रहित अथवा मलबे सहित मंद ढाल वाले चट्टानी तल पेडीमेंट कहलाते हैं।
- इनका निर्माण पर्वतीय अग्रभाग के अपरदन तथा चादर बाढ़ दोनों के संयुक्त प्रभाव से होता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

- 'पृष्ठक्षरण' (Backwasting) यानी समानांतर ढाल निवर्तन क्रिया द्वारा पेडीमेंट आगे बढ़ते हैं और पर्वत पीछे हटते हैं।
- धीरे-धीरे पर्वतों का पूर्ण अपरदन हो जाता है और केवल अवशिष्ट रूप में इंसेलबर्ग बचते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इस प्रकार मरुस्थलीय प्रदेशों का उच्च धरातल एक आकृतिहीन समतल मैदान में परिवर्तित हो जाता है, जिसे पेडीप्लेन या पदस्थली कहते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q.18 मरुस्थलों में अपवाहन गर्त (Deflation hollows) और वात-गर्त (Blowouts) कैसे बनते हैं?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q.18 मरुस्थलों में अपवाहन गर्त (Deflation hollows) और वात-गर्त (Blowouts) कैसे बनते हैं?

उत्तर :

- पवनों के एक ही दिशा में स्थायी प्रवाह से चट्टानों के अपक्षय जनित पदार्थों या असंगठित मिट्टी का अपवाहन होता है, जिससे उथले गर्त बनते हैं जिन्हें अपवाहन गर्त कहते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- तीव्र वेग की पवन के साथ उड़ने वाले धूल कण जब अपघर्षण करते हैं, तो चट्टानी तल पर छोटे गड्ढे या उथले गर्त बनते हैं जिन्हें वात-गर्त (Blowouts) कहा जाता है।
- इनमें से कुछ वात-गर्त समय के साथ और अधिक गहरे और विस्तृत हो जाते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

Q.19 बालू-टिब्बों के विभिन्न प्रकारों—बरखान, परवलयिक और अनुदैर्ध्य टिब्बों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

Q.19 बालू-टिब्बों के विभिन्न प्रकारों—बरखान, परवलयिक और अनुदैर्ध्य टिब्बों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर : उष्ण शुष्क मरुस्थलों में बालू-टिब्बों का निर्माण होता है, जो निम्नलिखित रूपों में पाए जाते हैं:

बरखान

- ये नव चंद्राकार टिब्बे होते हैं जिनकी भुजाएँ पवनों की दिशा में निकली होती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

परवलयिक (Parabolic)

- जहाँ रेतीले धरातल पर आंशिक रूप से वनस्पति भी पाई जाती है, वहाँ पवनों की स्थायी दिशा के अंतर्गत परवलयिक बालुका-टिब्बे बनते हैं, जो बरखान से भिन्न आकृति के होते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

अनुदैर्ध्य (Longitudinal)

- जब रेत की आपूर्ति कम तथा पवनों की दिशा स्थायी रहे, तब अनुदैर्ध्य टिब्बे बनते हैं जो अत्यधिक लंबाई व कम ऊँचाई के लंबायमान कटक प्रतीत होते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

निबंधात्मक प्रश्न

Q.20 तरंग व धाराओं द्वारा तटीय क्षेत्रों में उत्पन्न अपरदनात्मक (भृगु, कंदराएँ, स्टैक) तथा निक्षेपनात्मक (पुलिन, रोधिकाएँ, स्पिट, लैगून) स्थलरुपों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

निबंधात्मक प्रश्न

Q.20 तरंग व धाराओं द्वारा तटीय क्षेत्रों में उत्पन्न अपरदनात्मक (भृगु, कंदराएँ, स्टैक) तथा निक्षेपनात्मक (पुलिन, रोधिकाएँ, स्पिट, लैगून) स्थलरुपों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर : तटीय प्रक्रियाएँ सर्वाधिक गतिशील और विनाशकारी होती हैं, जहाँ तरंगों और धाराओं के प्रहार से विशिष्ट स्थलाकृतियों का निर्माण होता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

अपरदनात्मक स्थलरूप

1. भृगु (Cliffs) और वेदिकाएँ:

- ऊँचे चट्टानी तटों पर जब तरंगें अत्यधिक बल के साथ प्रहार करती हैं, तो पहाड़ी पार्श्व समुद्री भृगु का आकार ले लेते हैं।
- भृगु के पीछे हटने से सम्मुख तरंग घर्षित चबूतरे या तरंग निर्मित वेदिकाएँ बनती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

2. समुद्री कंदराएँ व स्टैक:

- भृगु की कठोर चट्टानों से टकराकर तरंगें आधार पर रिक्त स्थान बनाती हैं और गहराई तक खोखला कर 'समुद्री कंदराएँ' बनाती हैं। इन कंदराओं की छत के ध्वस्त होने से भृगु पीछे हटते हैं, और तट पर छूटी अलग-थलग प्रतिरोधी चट्टानें 'समुद्री स्टैक' कहलाती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

निक्षेपनात्मक स्थलरूप

1. पुलिन (Beaches)

- तटों की प्रमुख विशेषता पुलिन की उपस्थिति है, जो नदियों या तरंगों द्वारा लाए गए रेत और शिंगिल कणों से अस्थायी तटीय पट्टियों के रूप में बनते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

2. रोधिकाएँ, रोध और स्पिट

- तट के समांतर रेत और शिंगिल की कटक 'अपतट रोधिका' कहलाती है, और अधिक निक्षेप से ऊपर दिखने पर 'रोध' बनती है।
- जब रोधिका का एक सिरा खाड़ी या शीर्षस्थल से जुड़ जाता है, तो उसे 'स्पिट' कहते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भू-आकृतियाँ तथा उनका विकास

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

3. लैगून

- रोधिका और स्पिट जब किसी खाड़ी के मुख को अवरुद्ध कर देते हैं, तब लैगून निर्मित होते हैं, जो कालांतर में तलछटों से भरकर तटीय मैदानों में बदल जाते हैं।